उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों के प्राचार्यो की निर्णय क्षमता का अध्ययन

तुकेश कुमार,शोधार्थी *(शिक्षा) हेमचंद यादव विश्वविद्यालय,दुर्ग (छत्तीसगढ़)*

डॉ. प्रभा.आर.कुरुप (सहायक प्राध्यापक) *मैत्री कालेज, रिसाली, भिलाई,(छत्तीसगढ़)*

शोध सार

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के पुरुष एवम् महिला प्राचार्यों की निर्णय क्षमता का लिंग एवम् उनके शैक्षिक योग्यता के आधार पर अध्ययन किया गया। शोध अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के राजनादगॉव जिले में संचालित शहरी एवं ग्रामीण उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्राचार्यो को स्तरीकृत यादृच्छिक तकनीक का प्रयोग करते हुए कुल 120 प्राचार्यो का चयन न्यादर्श के रुप में किया गया। आंकड़ों की प्राप्ति के लिये एन.एन.गनिहार (2005) द्वारा निर्मित और मानकीकृत निर्णय क्षमता शैली मापनी स्केल का उपयोग कर प्राप्त आंकड़ों का वर्णात्मक सांख्यिकीय विधि द्वारा विश्लेषण किया गया।

निष्कर्ष में यह पाया गया कि विद्यालय एवम् प्रशासनिक समस्या संबंधी निर्णय प्रक्रिया में पुरुष प्राचार्यों ने महिला प्राचार्यो की तुलना में निर्णय क्षमता के प्रथम आयाम (नियमित निर्णय शैली)एवम् द्वितीय आयाम (समझौता निर्णय शैली) का प्रयोग किए। जबकि महिला प्राचार्यो ने विद्यालय एवम् प्रशासनिक समस्या संबंधी निर्णय प्रक्रिया में पुरुष प्राचार्यो की तुलना में निर्णय क्षमता के तृतीय आयाम (अनुमानी निर्णय शैली) का प्रयोग किए। अध्ययन में आगे यह पाया गया कि जिन उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के प्राचार्यो की शैक्षिक योग्यता केवल स्नातकोत्तर है। उन्होने बी.एड.योग्यताधारी प्राचार्यो की तुलना में शैक्षिक समस्याओं एवम् व्यक्तिगत् समस्याओं के लिए निर्णय क्षमता के प्रथम आयाम (नियमित निर्णय शैली) एवम् तृतीय आयाम (अनुमानी निर्णय शैली) का उपयोग किए। वही बी.एड. योग्यता धारी प्राचार्यो ने प्रशासनिक,शैक्षिक एवम् व्यक्तिगत् समस्याओं के लिए निर्णय क्षमता के तृतीय आयाम (अनुमानी निर्णय शैली) का प्रयोग किया।

मुख्य शब्दः उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय, निर्णय क्षमता, नियमित निर्णय शैली, समझौता निर्णय शैली, अनुमानी निर्णय शैली

प्रस्तावना

विद्यालय संगठन में प्रशासनिक व्यवस्था को सकारात्मक बनाये रखने के लिये प्राचार्यो में उचित निर्णय क्षमता का होना आवश्यक माना गया है। किसी प्राचार्य द्वारा लिया गया निर्णय विद्यालय संगठन के विकास में महत्वपूर्ण बिंदु होता है। प्राचार्य द्वारा विद्यालयीन समस्या,प्रशासनिक समस्या,शैक्षिक समस्या एवम् व्यक्तिगत् समस्या का सही तरीके से स्पष्टीकरण एवम् विश्लेषण उपरांत् उसके निदान के लिये महत्वपूर्ण निर्णय लिया जा सकता है।वर्तमान परिपेक्ष्य में विद्यालय के उत्तरोत्तर प्रगति के लिये श्रेष्ठ निर्णयकर्ता प्रशासक की आवश्यकता है। जो जिम्मेदारी पूर्वक त्वरित निर्णय लेने की क्षमता रखता हो। श्रेष्ठ निर्णयकर्ता वे प्रशासक होते है जो समस्या का तर्कपूर्ण विश्लेषण कर प्रभावी निर्णय लेते है। प्राचार्यो में बेहतर निर्णय क्षमता होने से प्रशासनिक दक्षता और प्रभावशीलता में वृद्वि होती है। निर्णय क्षमता में निर्णय लेना उपलब्ध विकल्पों में से सर्वश्रेष्ठ विकल्प के चयन की प्रक्रिया है। प्रभावी निर्णय लेने के लिये प्राचार्यो में सकारात्मक और नकारात्मक विकल्पों में अंतर के समझ हेतु स्थिर दिमाग का होना आवश्यक है। प्राचार्य को यह निर्धारित करना आना चाहिए कि उपलब्ध विकल्पों में से कौन सा विकल्प उस विशेष स्थिति के लिये अनुकूल होगा।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

विलहेल मेनास (2011) ने उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के प्राचार्यो के निर्णय लेने की क्षमताओं के मध्य समानताओं एवं अंतरों का अध्ययन किया। अध्ययन में उन्होने पाया कि प्राचार्य समानताओं में वे निर्णय लेते है जो शिक्षकों एवं छात्रों की शैक्षिक सफलताओं लिए प्रेरक रहे। वही प्राचार्यो द्वारा असमानताओं में लिए गए निर्णय क्षमता का नकारात्मक प्रभाव उनके प्रबंधकीय कार्यो में कमियों के साथ–साथ शिक्षक व छात्रों के नकारात्मक व्यवहार के रुप में पाया गया।

रहगोजर एवं अन्य (2012) ने शिराज शहर के स्कूल प्राचार्यों की व्यावसायिक तनाव और निर्णय क्षमता बीच संबंध का अध्ययन किया। सांख्यिकीय विश्लेषण से यह पता चलता है कि व्यावसायिक तनाव और निर्णय क्षमता के बीच सार्थक सहसंबंध होता है। साथ ही व्यावसायिक तनाव के मापदंडों (उत्साह की कमी, आत्म नियंत्रण में कमी एवं निम्न बुद्धिमत्ता) और निर्णय क्षमता के मध्य सार्थक सहसंबंध पाया गया। व्यावसायिक तनाव के दो मापदंडों (निम्न सामाजिक कौशल और अल्प आत्म–जागरूकता) और निर्णय क्षमता के मध्य सार्थक सहसंबंध नहीं पाया गया।

सुबथरा (2014) ने कॉलेज प्राचार्यो में निर्णय क्षमता और समय प्रबंधन की रुपरेखा का अध्ययन तमिलनाडु के कन्याकुमारी से 70 प्राचार्यों पर यादृच्छिक विधि द्वारा चयन कर किया गया । निर्णय क्षमता मापन के लिए रोवे एवं मासो (1987) द्वारा निर्मित निर्णय शैली मापनी, समय प्रबंधन के मापन हेतु मैक्सलैंड (2001) द्वारा निर्मित प्रश्नावली का उपयोग कर आँकड़ों का संकलन क्रिया गया। टी परीक्षण, प्रसरण विश्लेषण एवं सहसंबंध गुणांक द्वारा सांख्यिकी विश्लेषण किया। अध्ययन के निष्कर्ष में पुरुष और महिला प्राचार्य के निर्णय क्षमता और समय प्रबंधन में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

जॉय (2014) के अनुसार निर्णय निर्वात में नही लिया जा सकता है। विद्यालय का वातावरण प्रत्यक्ष एवम् अप्रत्यक्ष रुप से प्राचार्य के निर्णय को प्रभावित करता हैं। प्रभावी निर्णय के लिये विद्यालय प्राचार्य को विद्यालय के बाह्य एवम् आंतरिक वातावरण का ज्ञान होना आवश्यक है। **ज्योबा एवम् जिब्रिल (2015)** ने अपने शोध निष्कर्ष में पाया की निर्णय लेना विद्यालय संगठन के वांछित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विभिन्न विकल्पों में से समझ–बूझकर लिया गया नियोजित कार्य है। **जूलिया (2019)** ने प्राचार्यो की निर्णय क्षमता के विभिन्न शैलियों पर किये अपने शोध निष्कर्ष में पाया कि प्राचार्य लोकतांत्रिक भागीदारी निर्णय लेने के साथ निर्देशित निर्णय लेने की शैली का प्रयोग विद्यालय संगठन में किया। जिसमें उन्होने शिक्षको को भी शामिल किया था। **श्रवण एवम् मुथु लक्ष्मी (2021)** ने अपने अध्ययन में पाया कि निर्णय लेना विद्यालय प्रबंधन प्रक्रिया का एक अनिवार्य घटक है। और प्राचार्य जब विद्यालय के संदर्भ में एक के बाद एक निर्णय लेता है तो वह इसे अपने जीवन का महत्वपूर्ण कार्य मानते है। इस प्रकार प्राचार्यों के पास संतुलित व्यक्तित्व का होना आवश्यक है जो उसे परिस्थिति के अनुरुप सभी कार्यो को पूरा करने में सहायता करता है। **सुलेमान (2022)** के अनुसार प्राचार्यो को यह ज्ञात होना चाहिए कि विद्यालय संगठन व्यवस्था की प्रत्येक परिस्थितियों में अनेक विकल्प विद्यमान होते है। जिसका चयन वह निर्णय लेते समय उनके मूल्य,ज्ञान और प्राथमिकताओं के आधार पर कर सकता है। **डेनेकर (2023)** ने मध्य पंजाब के निजी विद्यालयों के प्राचार्यो की विभिन्न निर्णय शैलियों की पहचान पर अध्ययन किया। अध्ययन के परिणामों से पता चला कि प्राचार्यो द्वारा अन्य निर्णय लेने की शैलियों की अपेक्षा निरंकुश निर्णय शैली का अधिक प्रयोग किया गया। इसके अतिरिक्त निर्णय लेने की शैलियों में लिंग और आयु के संबंध में महत्वपूर्ण अंतर नही पाया गया। हॉलांकि उनकी वैवाहिक स्थिति और योग्यता का महत्वपूर्ण प्रभाव उनके निर्णय शैली पर पाया गया।

अध्ययन की आवश्यकता और महत्व

प्राचार्य विद्यालय संगठन के सफल संचालन के साथ–साथ विद्यालय के भौतिक, सामाजिक और आर्थिक कारकों के विकास का मुख्य घटक के रुप में कार्य करता है। प्राचार्य का कार्य शिक्षण कार्यक्रम और संस्थान के वित्त प्रबंधन दोनो का

देखरेख करना होता है। विद्यालय संचालन व्यवस्था में प्राचार्यो की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वह एक प्रर्वतक, प्रेरक, जनसंर्पक अधिकारी, प्रशासक, शैक्षणिक योजनाकार, सांस्कृतिक और खेल गतिविधियों के समन्वयक, पर्यवेक्षक, छात्रों एवम् शिक्षकों के संरक्षक होते है। प्राचार्य विद्यालय संगठन का नेतृत्वकर्ता होता है जो यह जानता है कि अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को विद्यालय के सर्वांगीण विकास में कैसे सहभागी बनाया जाए तथा किसी भी प्रकार की परिस्थितियों में सर्वोत्तम परिणाम किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है। प्राचार्य लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये सदैव अपने सहकर्मियों को प्रेरित व प्रोत्साहित करता है। हम सभी जानते है कि प्राचार्य किसी भी विद्यालय का रीड़ की हड्डी के रुप में कार्य करते है।

प्राचार्यो को ना केवल विद्यालय संगठन की आवश्यकताओं का पता लगाने में सक्ष्म होना चाहिए, बल्कि उन्हे विद्यालय से संबंधित बाह्य पहलुओं से जुड़ी कठिनाईयों से निपटने में भी सक्ष्म होना चाहिए। उनके निर्णय से प्राप्त परिणामों का शैक्षिक अधिकारियों, अभिभावकों, समाज और अन्य हितधारकों की अपेक्षाओं को पूरा करने में विफल रहने से उनकी काफी आलोचना की जाती है। निर्णय क्षमता निर्णय लेने के विकल्पों के एक समूह में से विकल्पों के चुनने कि प्रक्रिया के रुप में परिभाषित किया जाता है। जिसमें प्रभावी निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है। जब स्कूल प्रबंधन की बात आती है तो किसी भी प्राचार्य के लिए निर्णय लेने की क्षमता महत्वपूर्ण होता हैं। विद्यालय के प्राचार्य को अपने नियमित प्रशासनिक कार्य के विभिन्न पहलुओं में निर्णय लेने का दायित्व मिलता है। इस प्रकार निर्णय क्षमता एक महत्वपूर्ण कार्य है। जिस पर विद्यालय की सफलता निर्भर करती है।

निर्णय क्षमता का महत्व मुख्य रुप से विद्यालय संगठन के उद्देश्यों और लक्ष्यों की प्राप्ति का विश्लेषण और समीक्षा पर केन्द्रित है। पूर्व संबंधित साहित्य का अध्ययन और साहित्य की समीक्षा में शोधकर्ता ने पाया कि शोधकर्ताओं ने निर्णय क्षमता के विभिन्न शैलियों का अन्य कारकों पर महत्वपूर्ण प्रभाव एवम् संबंधों पर अध्ययन किया। उपरोक्त अध्ययनों के आधार पर यह स्पष्ट है कि निर्णय क्षमता एक निरंतर विकसित होने वाली प्रक्रिया है। तद्नुसार शोधकर्ता द्वारा प्राचार्यो के निर्णय क्षमता पर अध्ययन किया गया।

अध्ययन की कार्यप्रणाली एवम् रुपरेखा

वर्तमान अध्ययन वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्वति का उपयोग करके किया गया।

जनसंख्या और न्यादर्श

राजनांदगॉव जिले के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित शासकीय एवम् अशासकीय उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् 350 प्राचार्यो को अध्ययन की जनसंख्या के रुप में लिया गया। अध्ययन के नमूने(न्यादर्श) के रुप में शहरी एवम् ग्रामीण स्कूलों में कार्यरत् कुल 120 प्राचार्यो को स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक का उपयोग कर चयन किया गया।

अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला प्राचार्यो के बीच निर्णय क्षमता में अंतर का अध्ययन करना।
2. उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला प्राचार्यो की शैक्षिक योग्यता का निर्णय क्षमता में प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

H_1: उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला प्राचार्यो के मध्य निर्णय क्षमता में कोई अंतर नही पाया जाएगा।

परिकल्पना का परीक्षण वर्णात्मक सांख्यिकीय का उपयोग करके किया गया । प्राप्त परिणाम नीचे दी गई तालिका में दिए गए है।

तालिका संख्या–1: उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों के प्राचार्यो की निर्णय क्षमता के आयाम स्कोर का लिंग–वार विश्लेषण।

चर	निर्णय क्षमता मापनी के आयाम	लिंग	नमूना (N)	औसत (Mean)	मानक विचलन (SD)	औसत अंतर (Mean Difference)
निर्णय क्षमता	नियमित निर्णय शैली	पुरुष	73	8.52	3.48	1.65
		महिला	47	6.77	3.60	
	समझौता निर्णय शैली	पुरुष	73	19.50	3.08	1.65
		महिला	47	17.09	3.36	
	अनुमानी निर्णय शैली	पुरुष	73	16.85	2.47	7.06
		महिला	47	23.03	4.48	

उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों के प्राचार्यो की निर्णय क्षमता के विभिन्न आयामों की गणना का लिंगवार तुलना और औसत अंतर यह दर्शाता है कि,

- विद्यालय एवम् प्रशासनिक समस्या संबंधी निर्णय प्रक्रिया मे पुरुष प्राचार्यों ने महिला प्राचार्यो की तुलना में निर्णय क्षमता के प्रथम आयाम (नियमित निर्णय शैली) एवम् द्वितीय आयाम (समझौता निर्णय शैली) पर उच्च अंक प्रदर्शित किए।
- जबकि विद्यालय एवम् प्रशासनिक समस्या संबंधी निर्णय प्रक्रिया मे महिला प्राचार्यो ने पुरुष प्राचार्यो की तुलना में निर्णय क्षमता के तृतीय आयाम (अनुमानी निर्णय शैली) पर उच्च अंक प्रदर्शित किए।

H_2: उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला प्राचार्यो की शैक्षिक योग्यता का निर्णय क्षमता मे कोई प्रभाव नही पाया जाएगा।

परिकल्पना का परीक्षण वर्णात्मक सांख्यिकीय का उपयोग करके किया गया । प्राप्त परिणाम नीचे दी गई तालिका में दिए गए है।

तालिका संख्या–2: उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों के प्राचार्यों की निर्णय क्षमता की आयामों के स्कोर का उनके शैक्षिक योग्यता के आधार पर विश्लेषण

चर	निर्णय क्षमता मापनी के आयाम	शैक्षिक योग्यता	नमूना (N)	औसत (Mean)	मानक विचलन (SD)	औसत अंतर (Mean Difference)
निर्णय क्षमता	नियमित निर्णय शैली	PG	34	9.29	3.86	1.95
		PG& B.Ed.	86	7.32	2.82	
	समझौता निर्णय शैली	PG	34	20.81	2.82	4.23
		PG& B.Ed.	86	18.57	3.48	
	अनुमानी निर्णय शैली	PG	34	14.86	2.10	- 6.20
		PG& B.Ed.	86	20.07	3.94	

उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों के प्राचार्यो की निर्णय क्षमता के विभिन्न आयामों की गणना उनके शैक्षिक योग्यता के आधार पर तुलना और औसत अंतर यह दर्शाता है कि,

- जिन प्राचार्यो की शैक्षिक योग्यता केवल स्नातकोत्तर था उन्होने स्नातकोत्तर सह बी.एड. योग्यताधारी प्राचार्यो की तुलना में शैक्षिक समस्याओं एवम् व्यक्तिगत् समस्याओं के लिए निर्णय क्षमता के प्रथम आयाम (नियमित निर्णय शैली) एवम् द्वितीय आयाम (समझौता निर्णय शैली) पर उच्च अंक प्रदर्शित किए।

- जबकि जिन प्राचार्यो की शैक्षिक योग्यता स्नातकोत्तर सह बी.एड था उन्होने स्नातकोत्तर योग्यताधारी प्राचार्यो की तुलना में प्रशासनिक,शैक्षिक एवम् व्यक्तिगत् समस्याओं के लिए निर्णय क्षमता के तृतीय आयाम (अनुमानी निर्णय शैली) पर उच्च अंक प्रदर्शित किए।

निष्कर्ष

जो प्राचार्य स्वंय तथा विद्यालय के शिक्षकों व अन्य सहयोगी कर्मचारियों की अच्छाई एवं कमजोरियों से भलीभॉति परिचित होते है। तथा उनकी प्रतिक्रियाओं को समझकर उनसे वार्तालाप करते है। विद्यालय परिवेश में आने वाले बदलाव के अनुरुप सकारात्मक व्यवहार करते है तथा जिसमें उच्चभावनात्मक बुद्विमता होता है, वे नियमित निर्णय शैली का उपयोग नही करते है। दूसरे शब्दों में उच्चभावनात्मक स्तर वाले प्राचार्यो में नियमित निर्णय शैली की संभावना निम्न होता है। वही उच्च व्यावसायिक अभिविन्यास वाले प्राचार्य अपनी व्यक्तिगत रुचि और भावना को अलग रखते है। आत्मनियंत्रण की क्षमता रखतें है और चुनौती पूर्ण परिस्थितियों में दृढ़ता बनाए रखने का कौशल जानते है तथा दूसरों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने में सक्ष्म होते है वे समझौतावादी निर्णय लेने की शैली नही अपनाते है। जो प्राचार्य स्वंय और दूसरों के गुणों के प्रति जागरुक होते है, शिक्षा प्रणाली में बदलावों को अपनाने में सक्ष्म होते है, जिनमें उच्च स्तर का अंतरवैयक्तिक प्रबंधन और समस्या समाधान का दृष्टिकोण होता है, और जो पारस्परिक प्रबंधन के अंर्तगत बदलाव की पहल करते है, वे अनुमानात्मक निर्णय शैली अपनाते है, जिससे समस्या समाधान में संज्ञानात्मक तनाव को कम किया जा सकता है। परिणाम में यह भी पाया गया की जिन प्राचार्यो में समग्र रुप से अधिक भावानात्मक बुद्विमता होती है उनमें अनुमानात्मक निर्णय लेने की शैली अपनाने की संभावना अधिक होती है।

संदर्भित ग्रंथ

Denekar (2023), A Study of Decision Making Styles of Academic Managers in Public Sector Universities of the Punjab, Bulletin of Education and Research, August 2020, Vol. 42, pp 181-196.

Drucker, P.F. (1964). Managing for Results, New York: Hoper and Row.

Ganihar, N.J. (2005), Decision Making Style Scale, Catalogue, Agra: National Psychology Corporation, Kacheri Ghat, Agra (India).

Glueck, W.F. (2006). Decision Making: Organization Choice. Personal Psychology, Vol. 27, No. 1. pp. 77-79.

Halpin, W.A. (Ed.) (1969). Administrative Theory in Education, London: The Macmillan Company.

Joy (2014), Exploring Effective Decision- making of Heads in Secondary School in the Free State Province, Retrived from: uir.unisa.ac.za/bitstream/handle/00 front.pdf.

Julia (2019), Head Leadership and School Effectiveness: Perspective from Heads and Teachers, (Dissertation) Retrieved from: http://schoolworks.wmich.edu/dissertation/568.

Jyoba, Jibril (2015). Essentials of Managing Organizational Behaviour, New Jersey: Prentice Hall.

Katz, L.R. (1955). Skill of an Effective Administrator. Harvard Business Review, 33, February, pp. 33-42.

Lipham, M.J. and Hoeh, A.J. (1974). The Principalship: Foundations and Functions, New York: Harper and Row.

Maheshwari, B.L. (1980). Decision Styles and Organizational Effectivness, New Delhi: Vikas Publishing House, Pvt. Ltd.

Saxena, S.C.(1972). Organization and Management. Agra: Sahitya Bhavan.

Sharvan, Muthu Laxmi (2018), Decision Making Style of Secondary School Head Masters with Reference to their Length of Service, International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research, Vol.1, Issue 1, pp 37-40.

Suleman (2022), Participative Decision Making and Job Satisfaction, University of the West Bangal, Economics.